

स्त्री: देह से आगे पुस्तक पर संवाद...स्त्री कमजोर नहीं उसने स्वयं को माना कमजोर

## विवाह संस्था में विकृति के कारण बढ रहे हैं तलाक के मामले

कलगुरु प्रो. कटेजा, संस्कृत महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. राजोरिया ने दिया संबोधन

प्रतिका न्यूज नेटकी patrika.com ways rower favolation

वर्षे कुरापुर हो. जरूपन कटेमा ने समाज में जनकर के सामने बचने पर खिला जाबिर काते हुए इस विवति के लिए विवास संस्था में विकृति को जिम्मोद्धार तकराया। यही महरूपा की प्राचार्य हाँ. अनुस्थ वर्मारक ने कहा कि वेदों में अर्ध्वनारीस्थर का उत्लोख है, किन ची आज महिला स्वयं को मुतक्षित कार्य नहीं करती।

यो करेका व शॉ. राजोरिक ने भार कट का व दार राज्याच संशास्त्रार को एडिका समझ के प्रधान संचारक मनाब क्रोतारी की प्रस्तक 'हती देह से आपे' पर अयोजन राजस्थान एविका की ओर क्र फेज के दौरान हुआ। प्रो क्टेजा ने कहा कि रूपी कमजोर लगें हैं, बारिक उसने स्वयं को क्रमानीर सान विराह है। उन्होंने स्वात किया कि सबी की श्रीकार त्य है, उसे हम जानपुरस्कर क्यों तोहते जा रहे हैं? स्त्री यस्य से अपने में और उससे अधिक कर स्कारी है. शोकिन उसने देह को क्यजोरी बचा शिवा।





पुरुषों से स्पर्धा के कारण स्त्री को नुकसान करन चारती है, जो परुष करता है। इसे अपना को हैं। विवार संस्था योगों पति के समर्थन के बिना संभव नहीं अध्ययकत नहीं है, क्योंकि एउटा के है। इसमें विकृति के कारण तलक के If the more for \$ for our self \$ विक्रिया प्रस्तको पर प्रस्ता सामग्रे STREET AND COMES DESCRIPTIONS वाली यह प्रत्यक वादाओं का केरान जरित्तन देश की जा की है। उन्बंदि सर्वदर्शन करेगी। उन्होंने विवार राम - जीवियों में महिलाओं के कामकाज की संस्था कमलीर पड़ने पर जिंता का आकलन नहीं करने पर सवाल जिंदर करते हुए कहा कि हमें हम

🦗 मां ही बनाती है संतान को घर में रहने लायक

विवाह समर्पण से जड़ा विषय है. इस संस्था में संतलन कैसे हो सकता है?



**्र रंत्री को बेवी कहा** जाता हैं, सेकिन मूं को में बोर्ड विशेषका वाचता नहीं होता। जो नहीं को इनका नहीं करते हैं नकता में **उसे सीमा में बांध विद्या** वीन करते हैं। रिपर्वी के प्रति क्राला व अन्य अपना बढ़ रहे हैं, यह भी मानीस्करत **जाता है। ऐसा क्यों?** शे जुझ किएव हैं। इसे मां, बहुन व मिता ही करता सकते हैं।

## पश्चिमी सभ्यता वाली पीढी अवश्य पढे यह पस्तक

परिचमी क्यत के पैछे जा सी पैदी को यह एतक अवस्य पदनी चरिए। उन्होंने सवल उदाय कि नवरात्र में 9 दिन एती की पूजा थे करा हुए करी तथा की अपनी जा की - अपनी हैं लेकिए एक ही जो जाए हैं? वेची में अर्झनरीकार का जिस वर्ती करते। सालीक लख्की कर्ज मारवाज नहीं करती। यात एक स्टाइडी - रही है। उन्होंने करत कि महिला की विवाह के बाद दूसरे घर जाती है तो अंतरिक सुंदरता उसकी शिंग है, उससे बदानों की अदेशा क्यों की जिसे देखने-समझने की जरूरत हैं। राजस्थान विवि में



पत्रिका न्यज नेटवर्क patrika.com

**जयपर** . स्त्री और उसकी भमिका से जड़े पहलओं को समझाने के लाए पविका समझ के प्रधान संपादक गलाब कोठारी की पस्तक 'स्त्री: देह से आगे' को विवि के समाजशास्त्र विभाग के पाठयकम में शामिल किया जाएगा। राजस्थान विश्वविद्यालय के कलपति प्रो. अल्पना कटेजा ने मंगलवार को इसकी घोषणा की। इसी दौरान सामने आया कि जगदगर रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय इस पुस्तक को पाठयकम में शामिल करने की घोषणा पहले ही कर चुका है।

राजस्थान पत्रिका के नेशनल बुक फेयर में मंगलवार को पत्रिका समूह के प्रधान संपादक गुलाब कोटारी की प्रस्तक 'स्वी: देह से आगे' पर संवाद के दौरान यह जानकारी दी गई। संवाद जयपुर स्थित जवाहर कला केंद्र में चल रहे बक फेयर में आयोजित किया गया।

## The book 'Stri Deh Se Aage' will be included in the syllabus of Sociology Department

Aspects related to women and their role, the book 'Stri Deh Se Aage' by Gulab Kothari, Editor-in-Chief of Patrika Group, will be included in the curriculum of the Sociology Department of the University. The announcement was made by Professor Alpana Kateja, Vice Chancellor of Rajasthan University, during a discussion on the book 'Stri Deh Se Aage' at the Rajasthan Patrika National Book Fair at Jawahar Kala Kendra, Jaipur on Tuesday, 18 November 2025. Earlier, Jagadguru Ramanandacharya Rajasthan Sanskrit University had announced to include this book in the curriculum